Aayushi International Interdisciplinary Research Journal (AIIRJ)
UGC Approved Sr.No.64259
Vol - V Issue-IV APRIL 2018 ISSN 2349-638x Impact Factor 4.574

उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में सामन्य वर्ग तथा वंचित वर्ग के विद्यार्थियों के बीच सामाजिक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ. सोनाली चन्नावार
प्रिंसिपल महात्मा गाँधी कॉलेज रायपुर

श्रीमती तरन्नुम खान
असिस्टेंट प्रोफेसर
दिशा कॉलेज ऑफ़ मैनजमेंट रायपुर छत्तीशगढ।

सार संक्षेप

शिक्षा का सीधा संबंध ज्ञान, सफलता, समृद्धि से माना जाता है । लगभग सभी शिक्षा शास्त्रियों ने शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य बालक का सर्वांगीण विकास करना माना है । जिसमें बौद्धिक विकास का स्थान सर्वोपरि है । बौद्धिक विकास के अंतर्गत बुद्धि को तीन रूप से समझा जाता है मूर्त, अमूर्त और समाजिक बुद्धि । जिसमें समाजिक बुद्धि को सफलता और सामन्जस्य के लिए अत्यन्त आवश्यक माना जाता है । यदि बालक में समाजिक बुद्धि का उचित विकास हुआ हो तो वह विपरीत परिस्थितियों में भी सामन्जस्य स्थापित करके जीवन को सफल बनाता है । परन्तु सामाजिक बुद्धि के स्तर का कम या अधिक होने पर बालक के पारिवारिक पृष्ठ भूमि और उसके वातावरण का भी महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है । इस शोध प्रपत्र का प्रमुख उद्देश्य उच्चतर माध्यमिक स्तर में वंचित और सामान्य वर्ग के छात्र एवं छात्राओं के बीच सामाजिक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना है ।

प्रस्तावना

मानव जीवन की सुन्दरता एवं सार्थकता में जो महत्वपूर्ण तथ्य समाहित है उनमें शिक्षा का महत्वपूर्ण स्थान है । शिक्षा एसी अनवरत प्रक्रिया है जिसके द्वारा बालक के दृष्टिकोण, ज्ञान, व्यवहार, चरित्र तथा आदतों को सकारात्मक और लोक कल्याणकारी रूप प्राप्त होता है। शिक्षा ग्रहण करने की प्रक्रिया में बुद्धि का महत्वपूर्ण स्थान है क्योंकि बुद्धि के कारण ही मानव विवेक पूर्ण कार्य करता है और वातावरण के साथ समायोजन करता है । सामन्जस्य करने की प्रक्रिया में बालकों के सामाजिक बुद्धि के स्तर का महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है । सामाजिक बुद्धि से तात्पर्य किसी भी विषय में वैचारिक सामानता, दोस्ताना व्यवहार आरंभ करने तथा मित्रता बनाये रखने जैसे गुण समाहित है ।

थार्न डाईक के अनुसार ऐसे सामान्य मानसिक क्षमता जिसके सहारे व्यक्ति को ठीक ढंग से समझा जा सकता है और व्यवहार कुशलता प्रदर्शित होती है वही सामाजिक बुद्धि है । ऐसे लोगों का सामाजिक संबंध अच्छा होता है और समाज में उनकी प्रतिष्ठा भी अच्छी होती है।

उद्देश्य

उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में सामान्य वर्ग और वंचित वर्ग के विद्यार्थियों की समाजिक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन।

अनुसंधान विधि और शोध उपकरण

प्रस्तुत शोध प्रपत्र के संभाव्य न्यादर्श में यादृच्छिक चयन किया गया है । पूरी जनसंख्या का अध्ययन न करते हुए न्यादर्श चयन में संभाव्य न्यादर्श विधि का प्रयोग किया गया है । जिसके अंतर्गत माता सुन्दरी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय एवं सचदेवा इन्टरनेशनल स्कूल रायपुर के सामान्य वर्ग के छात्र—छात्राओं और वंचित वग्र के छात्र—छात्राओं का न्यादर्श लिया गया है ।

इस शोध प्रपत्र में क्षेत्र अध्ययन विधि का प्रयोग किया गया है। तथा अध्ययन के लिए प्रमाणिकृत प्रश्नावली उपकरण — * Social Intelligence Scale (SIS)*/समाजिक बुद्धि परीक्षण का प्रयोग किया है जिसका निर्माण डॉ. एस. माथुर, डायरेक्टर, वी.जी. इन्सटीट्यूट गुजरात द्वारा किया गया है।

शोध का क्षेत्र और परीसीमन

किसी समस्या का समग्र और व्यापक अध्ययन करना संभव नही है क्योंकि इसमें साधन और समय बहुत अधिक लगते हैं । अत: इस शोध प्रपत्र के लिए अध्ययन को निम्न प्रकार से परीसीमित किया गया है ।

(१) अध्ययन के लिए रायपुर शहर के दो विद्यालयों का चयन किया गया है ।
(२) इस अध्ययन में नवमीं, दसवीं, ग्यारहवी एवं बारहवीं कक्षा के छात्र—छात्राओं का न्यादर्श लिया गया है ।
(३) यह अध्ययन नवमीं से बारहवीं तक की कक्षाओं के सामान्य और वंचित वर्ग के विद्यार्थियों तक सीमित है ।
(४) इस अध्ययन के लिए १२० विद्यार्थियों का चयन किया गया है ।

परिकल्पना

(१) उच्चतर माध्यमिक स्तर पर सामान्य और वंचित वर्ग के विद्यार्थियो के बीच समाजिक बुद्धि में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा ।

विश्लेषण

चर	वर्ग	छात्र एवं छात्राएं	कुल आवृत्तियों का योग (छ)	मध्यमान (ड)	प्रमाणिक विचलन (S.D.)	टी मूल्य (ज)	सार्थकता स्तर
समाजिक बुद्धि (Social Intelligence)	सामान्य	विद्यार्थी	६०	६९.५७	९.३५	१.६८	०.०५ पर असार्थक
	वंचित	विद्यार्थी	६०	६६.८	८.६३		
स्वतंत्रता चर (कि) = N1 + N2 – 1, df = 60 +60 -1 = 119							

उपरोक्त तालिका के अनुसार गणना करने पर सामान्य वर्ग के विद्यार्थियों का मध्यमान (ड) ६९. ५७ तथा वंचित वर्ग के विद्यार्थियों का मध्यमान (ड) ६६.८ आया है । सामान्य वर्ग के विद्यार्थियों का मानक विचलन (ण्क्ण्) ९.३५ तथा वंचित वर्ग के विद्यार्थियों का मानक विचलन (ण्क्ण्) ८.६४ आया है । दोनों की कु ल आवृत्तियों (छ) का योग ६० है गणना करने पर (ज) का प्राप्तांक १.६८ प्राप्त हुआ जोकि स्वतंत्रता चर (कि) त्र ११९ पर ०.०५ की सार्थकता स्तर पर १.९८ से कम है । अत: यह शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है ।

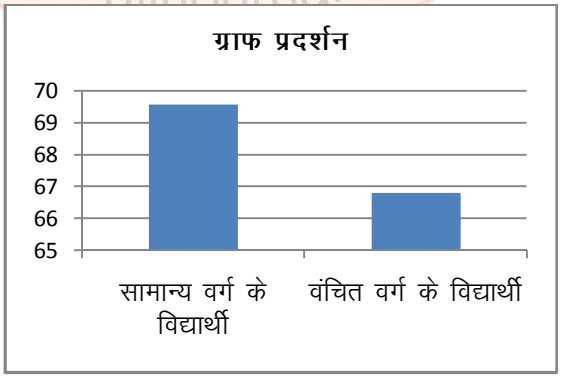

निष्कर्ष

प्राप्त आंकड़ों के आधार पर सामान्य वर्ग विद्यार्थियों और वंचित वर्ग के विद्यार्थियों की समाजिक बुद्धि में सार्थक अंतर नहीं पाया गया है क्योंकि उनमें बौद्धिक क्षमता लगभग समान होती है और वे समान रूप से शिक्षा ग्रहण करते हुए विकास करते है और सामन्जस्य स्थापित करते हैं । अत: यह निष्कर्ष है कि समाजिक बुद्धि के स्तर पर जाति तथा वर्ग प्रभावकारी तथ्य नहीं है ।

अध्ययन का शैक्षिक महत्व

(१) समाजिक बुद्धि का उच्च स्तर शैक्षिक उपलब्धि में सहायक होता है । जिससे विद्यार्थियों को जीवन के हर क्षेत्र में सफलता प्राप्त होती है ।

(२) उच्चतर माध्यमिक स्तर में सामान्य और वंचित वर्ग के विद्यार्थियों की समाजिक बुद्धि के स्तर में अंतर ज्ञात होगा ।

(३) यह अध्ययन विद्यार्थियों, शिक्षकों तथा शिक्षण संस्थाओं के लिए उपयोगी सिद्ध होगा ।

(४) विद्यार्थियों के शैक्षिक विकास के लिए बनाई जाने वाली योजनाओं के लिए सार्थक सिद्ध होगा ।

संदर्भ सूचि

1. Bhatnagar, Suresh, Gupta, Dr. Mahima & Sinh, Dr. K.P. (1900). Shiksha Manovigyan, Surya Publication, Meerut (U.P.); R. Lall.
2. Kulshrestha, S.P. (2004). Educational psychology, Meerut; Surya Publication.
3. Albrecht, Karl (2005). Social Intelligence – The New Science of Success; John Wiley & Sons.
4. Khan, Tarannum (2014). 'उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में सामन्य वर्ग तथा वंचित वर्ग के विद्यार्थियों के बीच सामाजिक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन' , Shiksha Vibhag, Pt. Harishankar Shukla Smriti Mahavidyalaya, Raipur.

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal
ISSN 2349-638X
www aiirjournal.com